

मन के जीते जीत सदा

दैनिक

मुद्रण तारीख :- 18.09.2015

अंक-285

तारीख- 19 सितम्बर, 2015, भाद्रपद शुक्ल पक्ष-6

शनिवार

उदयपुर

कुल पृष्ठ-2

मूल्य -1 रूपया

पृष्ठ -1

आज का सुविचार

धार के विपरीत जा कर देखिये
जिन्दगी को आजमा कर देखिये
आंधियों खुद मोड़ लेंगी रास्ता
एक दीपक तो जला कर देखिये!

संयम एवं शांति



(प्रेरक प्रसंग)

महात्मा बुद्ध अपने शिष्यों के संग जंगल से गुजर रहे थे। दोपहर को एक वृक्ष के नीचे विश्राम करने रुके। उन्होंने शिष्य से कहा, "प्यास लग रही है, कहीं पानी मिले, तो लेकर आओ।" शिष्य एक पहाड़ी झरने से लगी झील से पानी लेने गया। झील से कुछ पशु दौड़कर निकले थे, जिससे उसका पानी गंदा हो गया था। उसमें कीचड़ ही कीचड़ और सड़े पत्ते बाहर उभरकर आ गए थे। शिष्य पानी लिए बिना ही लौट आया। उसने तथ्यागत से कहा कि झील का पानी निर्मल नहीं है, मैं दूर वाली नदी से पानी ले आता हूँ। बुद्ध ने उसे उसी झील का पानी ही लाने को कहा। शिष्य फिर खाली हाथ लौट आया। पानी अब भी गंदा था, बुद्ध ने शिष्य को फिर वापस भेजा। तीसरी बार शिष्य पहुंचा, तो झील बिल्कुल निर्मल और शांत थी। कीचड़ बैठ गया था और जल स्वच्छ हो गया था। जब वह निर्मल जल लेकर वापस लौटा, तो महात्मा बुद्ध ने उसे समझाया कि यही स्थिति हमारे मन की भी है। जीवन की दौड़-भाग मन को भी विक्षुब्ध कर देती है, मध देती है। पर यदि कोई शांति और धीरज से उसे बैठा देखता रहे, तो सारी कीचड़ अपने आप नीचे बैठ जाती है और सहज निर्मलता का आगमन हो जाता है। इससे शिष्य को जीवन का महत्वपूर्ण सबक मिल गया।

शिक्षा :-
संयम के साथ विचार करने पर किसी भी समस्या का समाधान निकाला जा सकता है।

अनमोल वचन

एक व्यक्ति द्वारा
स्वामी जी से पूछा गया
सब कुछ खोने से
ज्यादा बुरा क्या है?
स्वामी जी ने उत्तर दिया -
"वो उम्मीद खोना जिसके
भरोसे पर हम सब कुछ
चापस पा सकते हैं."



सूर्य षष्ठी व्रत
भाद्रपद माह की शुक्ल पक्ष
की षष्ठी को मनाया जाता
है। सूर्य षष्ठी व्रत 19
सितंबर 2015 को मनाया
जाना है। यह पर्व भगवान
सूर्य देव की आराधना एवं
पूजा से संबंधित है। इस
दिन भगवान सूर्य की पूजा
के सतह साथ गायत्री मंत्र
का स्मरण भी होता है। सूर्य
का बहुत महत्व है। जीवों
तथा वनस्पति को पोषण
देने वाला सूर्य है।

अतः इस दिन सूर्य भगवान
की आराधना जो श्रद्धालु
विधिवत तरीके से करते हैं
उन्हें पुत्र, आरोग्य और धन
की प्राप्ति होती है। सूर्य देव
की शक्ति का उल्लेख वेदों
में, पुराणों में और योग
शास्त्र आदि में विस्तार से
किया गया है। सूर्य की

उपासना सर्वदा शुभ
फलदायी होती है। अतः सूर्य
षष्ठी के दिन जो भी व्यक्ति
सूर्यदेव की उपासना करता
है वह सदा दुख एवं संताप
से मुक्त रहते हैं।

सूर्य षष्ठी व्रत विधि-

सूर्य षष्ठी के दिन सूर्योदय
पूर्व दैनिक कर्म से निवृत्त
होकर घर या घर के समीप
बने किसी जलाशय, नदी,
नहर में स्नान करना
चाहिए। स्नान करने के
पश्चात उगते हुए सूर्य की
आराधना करनी चाहिए।
भगवान सूर्य को जलाशय,
नदी अथवा नहर के समीप
खड़े होकर अर्घ्य देना
चाहिए। शुद्ध घी से दीपक
जलाना चाहिए। कपूर, धूप,
लाल पुष्प आदि से भगवान
सूर्य का पूजन करना
चाहिए।



योग गुरु स्वामी रामदेव ने कराया योगाभ्यास

जैसलमेर। योग गुरु स्वामी रामदेव ने सीमा सुरक्षा बल के अधिकारियों व जवानों को योगाभ्यास करवाया। रामदेव तीन दिन तक जैसलमेर में रह कर सीमा सुरक्षा बल के अधिकारियों, जवानों और आमजनों को योग सिखाया। योग गुरु रामदेव सीमा सुरक्षा बल के स्वर्ण जयंती समारोह के उपलक्ष्य में यहां आये थे।

बाबा रामदेव ने सुबह पांच बजे से साढ़े सात बजे तक बल के अधिकारियों व जवानों को योग सिखाया।

पूर्व का वेनिस - उदयपुर शहर

झीलों के शहर,
उदयपुर को पूर्व का वेनिस
शहर कहा जाता है।
महाराणा उदय सिंह - ने
1559 ई. में उदयपुर की
नींव रखी। दंत कथाएं
कहती हैं कि उदय सिंह को
एक पवित्र पुरुष ने पिछोला
झील के पास पहाड़ी पर
ध्यान करते हुए अपनी
राजधानी इसी स्थान पर
स्थापित करने का
मार्गदर्शन दिया। अरावली
शृंखला से घिरे, वनों और
झीलों से युक्त इस स्थान
को चित्तौड़गढ़ की तुलना
में सुरक्षित पाया। महाराणा
उदय सिंह की मृत्यु 1572
में हुई और उनके स्थान पर
महाराणा प्रताप आए
जिन्होंने मुगल आक्रमणों से
उदयपुर की रक्षा
वीरतापूर्वक की। महाराणा
प्रताप सबसे अधिक
सम्मानित राजपूत व्यक्तित्व
माने जाते हैं और वे 1576
में हल्दीघाटी के अंदर
मुगलों से वीरता पूर्वक
लड़े। उदयपुर भी निष्पादन
कलाओं, हस्तशिल्प और
अपनी प्रसिद्ध लघु तस्वीरों
का केन्द्र रहा है।

सिटी पैलेस पिछोला झील
पर स्थित है। महाराणा
उदय सिंह ने इस महल का



निर्माण आरंभ किया किन्तु
आगे आने वाले महाराणाओं
ने इस संकुल में कई महल
और संरचनाएं जोड़े, इसमें
संकल्पना की एक रूपता
को बनाए रखा है। महल
का प्रवेश हाथी पोल की
ओर से है। बड़ी पोल या
बड़ा गेट त्रिपोलिया अर्थात्
तीन प्रवेश द्वारों में से एक
है। एक समय यह रिवाज
था कि महाराणा इस प्रवेश
द्वार के नीचे सोने और
चांदी से तौले जाते थे और
फिर यह गरीबों में बांट
दिया जाता था। अब यहां
मुख्य टिकट कार्यालय है।
बालकनी, कूपोला और
बड़ी बड़ी मीनारें इस महल
को झील से एक सुंदर दृश्य
के रूप में दर्शाती हैं। सूरज
गोखड़ा एक ऐसा स्थान है
जहां से महाराणा जनता
की बातें सुनते थे, मुख्यतरु
कठिन परिस्थितियों में
रहने वाले लोगों का
उत्साह बढ़ाने के लिए
उनसे बातें करते थे। मोर
चौक एक अन्य स्थान है
जिसे दीवारों पर मोर के

मोती महल में दर्पण का
सुंदर कार्य है और चीनी
महल में सभी स्थानों पर
सजावटी टाइले लगी हैं।
सूर्य चौपड़ में एक विशाल
सजावटी सूर्य बना हुआ है
जो सूर्य के शासन का
प्रतीक है, जिसे मेवाड़
राजवंश का संकेत माना
जाता है। बड़ी महल एक
केन्द्रीय उद्यान है जिससे
शहर का अद्भुत दृश्य
दिखाई देता है। जनाना
महल या महिला कक्ष में
कुछ ओर सुंदर तस्वीरों को
देखा जा सकता है, जो
आगे चलकर लक्ष्मी चौक मे
खुलता है और यह एक
सफेद मंडप है।

अलग अलग महलों के
अंदर बड़ी चौक के दक्षिण
से जाने पर शिव निवास
और फतेह प्रकाश पैलेस हैं,
अब जिन्हें पोर्टल के रूप में
चलाया जाता है। पिछोला
झील के किनारे सिटी
पैलेस वास्तुकला और
राजस्थान के शासकों के
अधीन सांस्कृतिक दोहन
के उत्कृष्ट उत्पादों के
उदाहरण हैं। ये महल पूरी
दुनिया के पर्यटकों को
आकर्षित करते हैं और
अपनी सुंदरता और भव्यता
से उन्हें बांध लेते हैं।

सूरदास का शरीर त्याग

पारसोली वह स्थान है,
जहाँ पर कहा जाता है
कि श्रीकृष्ण ने
रासलीला की थी। इस
समय सूरदास को
आचार्य वल्लभ, श्रीनाथ
जी और गोसाईं
विट्ठलनाथ ने श्रीनाथ
जी की आरती करते
समय सूरदास को



अनुपस्थित पाकर जान
लिया कि सूरदास का अन्त समय निकट आ गया है।
उन्होंने अपने सेवकों से कहा कि, "पुष्टिमार्ग का जहाज"
जा रहा है, जिसे जो लेना हो ले ले। आरती के उपरान्त
गोसाईं जी रामदास, कुम्भनदास, गोविंदस्वामी और
चतुर्भुजदास के साथ सूरदास के निकट पहुँचे और सूरदास
को, जो अचेत पड़े हुए थे, चौतन्य होते हुए देखा। सूरदास
ने गोसाईं जी का साक्षात् भगवान के रूप में अभिनन्दन
किया और उनकी भक्तवत्सलता की प्रशंसा की।
चतुर्भुजदास ने इस समय शंका की कि सूरदास ने भगवद्
तो बहुत गाया, परन्तु आचार्य वल्लभ का यशगान क्यों नहीं
किया। सूरदास ने बताया कि उनके निकट आचार्य जी और
भगवान में कोई अन्तर नहीं है—जो भगवद्द्वय है, वही आचार्य
जी का भी यश है। गुरु के प्रति अपना भाव उन्होंने "भरोसो
दूढ़ इन चरनन केरो" वाला पद गाकर प्रकट किया। इसी
पद में सूरदास ने अपने को "द्विविध आन्धरो" भी बताया।
गोसाईं विट्ठलनाथ ने पहले उनके "चित्त की वृत्ति" और फिर
"नेत्र की वृत्ति" के सम्बन्ध में प्रश्न किया तो उन्होंने क्रमशः
बलि बलि बलि हों कुमरि राधिका नन्द सुवन जासों रति
मानी तथा "खंजन नैन रूप रस माते" वाले दो पद गाकर
सूचित किया कि उनका मन और आत्मा पूर्णरूप से राधा
भाव में लीन है। इसके बाद सूरदास ने शरीर त्याग दिया।

मानव मन के बील

(आत्मकथा)

प्रभु का प्रसाद है - नारायण सेवा

अब परई के शिविर की तैयारी
करनी थी लिस्ट बनाई दो
दिन पहले 12-15 लोगों की
लिस्ट बनाई। एक सर्जन ने
कहा मैं यही पर सो जाऊंगा।
सुबह चलना है लेट हो
जाऊंगा। एक बस किराये की
है 45 किलोमीटर दूर है। हम
सुबह चलेंगे, तो कमला जी का भोजन नास्ता, तो रात
को तीन बजे उठ कर के दाल-पुरी बनाई अब प्रातः
काल 6 बजे गये बस नहीं आई। जब देख रहे हैं अरे
बस नी आई पौन घण्टे बाद बस आई।



अब जब 15-20 जनं आने वाले थे तो 3-4 लोग ही
आये सब इन्तजार कर रहे हैं। सोचा क्या होगा 3-4
साथी से, प्रशान्त को कहा एक हमारे कोई पास में थे
उनको जगा उन्होंने कहा था मैं चलूंगा अभी आये नहीं
जरा देखना भाई साहब को बुला लाना वो दस मिनिट
बाद आया उदास प्रशान्त मैंने कहा क्या हुआ वो आये
नहीं बोले जरा नीन्द ज्यादा आ रही थी और बड़ी
मुश्किल से उठे और उन्होंने कहा अरे प्रशान्त आज
थोड़ी तबियत ठीक नहीं है। थकान ज्यादा आ रही है।
अगली बार चलेंगे।

ये सुन के मेरी आंखों से टप-टप आंसू पडने लगे।
बहुत रोया मैं बहुत सोचा एक दिन पहले ही मेरे पूज्य
पिताजी मदन लाल अग्रवाल साहब कैंसर की वजह से
उदयपुर के कॉंटेज वार्ड जनरल हॉस्पिटल जो भर्ती
फेफड़े का कैंसर हो रहा था। शनिवार को मुझे कहा
कैलाश तुम मेरे मोह में यहां बैठे मत रहना तु जा शिविर
की तैयारी कर पौष्टिक आहार लेजा मुखो को भोजन
करा। मैं तुझे विश्वास दिलाता हूँ तु जब तक शिविर से
भूखों को भोजन करायेगा। मैं अपने प्राणों को नहीं जाने
दुंगा मेरी चिन्ता मत कर। एक मांगी राज ने एक
भगवान ने एक परोपकारी महापुरुष ने कैंसर होने के
बावजूद मुझे शिविर के लिए प्रयन्त कॉलोनी उदयपुर
भेजा और जिन महानुभावों की लिस्ट बनाई उनको
आगे जैसे चलना था रास्ते में नाश्ता होगा। दिन का
भोजन कमला जी ने बनाया पराठे अचार सब्जी आलु
की ये होना सेवा का लाभ मिलेगा।

क्रमश अगले अंक में

सूर्य षष्ठी व्रत



उसके बाद दिन भर
भगवान सूर्य का मनन
करना चाहिए। इस दिन
अपाहिजों, गरीबों व्यक्तियों
तथा निर्धन ब्राह्मणों को
अपनी सामर्थ्य के अनुसार
दान देना चाहिए। दान के
तौर पर वस्त्र, खाना तथा
अन्य उपयोगी वस्तुएं
जरूरतमंद व्यक्तियों को दे
सकते हैं। भाद्रपद शुक्ल

पक्ष की षष्ठी के दिन
भगवान सूर्य के निमित्त रखे
जाने वाले व्रत में सुबह
सूर्योदय से पूर्व उठकर
बहते हुए जल में स्नान
करना चाहिए।
स्नान करने के पश्चात
सात प्रकार के फलों,
चावल, तिल, दूर्वा, चंदन
आदि को जल में मिलाकर
उगते हुए भगवान सूर्य को

जल देना चाहिए। सूर्य को
भक्ति तथा विश्वास के साथ
प्रणाम करना चाहिए।
उसके पश्चात सूर्य मंत्र का
जाप 108 बार करना
चाहिए। सूर्य मंत्र है रु-
"ॐ घृणि सूर्याय नमः"
अथवा "ॐ सूर्याय नमः"
इसके अतिरिक्त "आदित्य
हृदय स्तोत्र" का पाठ भी
किया जाना चाहिए।

सूर्य षष्ठी का महत्व:- इस
दिन श्रद्धालुओं द्वारा
भगवान सूर्य का व्रत रखा
जाता है। सूर्य को प्राचीन
ग्रंथों में आत्मा एवं जीवन
शक्ति के साथ साथ
आरोग्यकारक माने गए हैं।
पुत्र प्राप्ति के लिए भी इस
व्रत का महत्व माना गया है।
इस व्रत को श्रद्धा तथा
विश्वास से रखने पर
पिता-पुत्र में प्रेम बना रहता

है। सूर्य की रोशनी के बिना
संसार में कुछ भी नहीं होगा
सूर्य की किरणें जीवन का
संचार करती हैं प्राणियों में
शक्ति एवं प्रकाश उजागर
करती हैं। सूर्य की उपासना
से शरीर निरोग रहता है।
सूर्य षष्ठी को जो व्यक्ति
सूर्य की उपासना तथा व्रत
करते हैं उनकी समस्त
व्याधियां दूर होने लगती हैं।
सूर्य चिकित्सा का उपयोग
आयुर्वेदिक पद्धति तथा
प्राकृतिक चिकित्सा पद्धति
में किया जाता है। शारिरिक
दुर्बलता, हड्डियों की
कमजोरी या जोड़ों में दर्द
जैसी तकलीफें सूर्य की
किरणों द्वारा ठीक हो
सकती हैं। सूर्य की ओर
मुख करके सूर्य स्तुति करने
से शारीरिक चर्मरोग आदि
नष्ट हो जाते हैं।

सम्पादकीय

जीवन में सफलता प्राप्त करने के लिए शारीरिक स्वास्थ्य का ध्यान रखना हमारा सर्वप्रथम कर्तव्य है। शरीर को निरोग रखिए। इसकी शक्ति तथा सहन सामर्थ्य बढ़ाइए। जहाँ तक हो सके, इसे सुन्दर से सुन्दर बनाने का प्रयत्न कीजिए। अपने कमरे में अपोलो की अथवा वीनस की एक छोटी सी मूर्ति प्रेरणा हेतु रखिए। प्रत्येक व्यक्ति में पैतृक दुर्बलताएँ तथा कालिदास ने कहा 'शरीर ही कर्तव्य पालन का सबसे प्रधान साधन है' (शरीरमाद्य खलु धर्मसा धनम्)। यदि हम सुन्दरा का वरदान पाकर उत्पन्न नहीं हुए, तो भी हम अपने शरीर को स्वस्थ बनाकर रोगों से दूर रखकर, उदात्तमन तथा शान्त मस्तिष्क द्वारा आकर्षक बना सकते हैं। सौन्दर्य केवल त्वचा तक ही सीमित नहीं होता, इसकी गहराई आत्मा तक होती है।

उत्तम स्वास्थ्य के बिना जीवन एक बोझ के समान है। जीवन में कष्ट साध्य तथा परिश्रम जन्य कार्यों के लिए हमको शारीरिक शक्ति तथा सहन सामर्थ्य की आवश्यकता होती है। हमें ऐसी अनुभूति होनी चाहिए जिसे फ्रेंच लोग 'जीवन का हर्ष' कहते हैं। यह अनुभूति हमारे शरीर की प्रत्येक नस-नाड़ी और प्रत्येक अणु को होनी चाहिए। तब निराशा और चिन्ता का अन्धकार हमारे मन को आक्रांत नहीं करेगा। एक स्वस्थ व्यक्ति के लिए आशावाद उतना ही आवश्यक है जितनी श्वासोच्छ्वास क्रिया तथा निद्रा। हमें सुखद निद्रा आनी चाहिए। अनिद्रा से निराशा का जन्म होता है जो सफलता प्राप्ति में बाधक है।

यदि हम अपने शरीर को स्वस्थ अवस्था में नहीं रखते, तो बीमारी में हमारा समय नष्ट होगा। समय कभी-कभी धन है, किन्तु समय प्रत्येक काल में जीवन है। जीवन के लघुतम समय को भी रूग्णावस्था में नहीं व्यतीत होने देना चाहिए।

हमें मौसंपेशियों को असाधारण रूप से बलशाली बनाने की आवश्यकता नहीं, इस प्रकार का प्रयास तो उन्हें करना है जिन्हें शारीरिक प्रदर्शन की विद्या अपनानी हो, पहलवान या मुक्केबाज बनना हो। हमें सामान्य स्वास्थ्य, शक्ति, कुशलता तथा स्फूर्ति प्राप्त करनी है। हमें यह उचित अधिकार है कि हमें स्वस्थता का आनन्द प्राप्त करने की इच्छा रखें और दीर्घ आयु प्राप्त करने की कामना करें। शरीर रचना तथा शरीर क्रिया विज्ञान का अध्ययन करके अपने शरीर के बारे में पर्याप्त ज्ञान प्राप्त कीजिए।

हमें कुछ एक ऐसी पुस्तकें भी पढ़नी चाहिये, जो विशेषज्ञों द्वारा लिखित हों। अपने सामान्य सूझ-बूझ के द्वारा हमको उन्हें व्यवहार में उतारने का प्रयास करना चाहिए। स्वास्थ्य केवल एक उच्चतर लक्ष्य प्राप्ति का साधन है। हर समय सेहत बनाने के ध्यान में डूबे रहना ठीक नहीं हमें उनका अनुकरण करने का प्रयत्न मत कीजिए जो हर समय कैलोरीज, विटामिन तथा टोक्सिन की ही रट लगाकर उबा देते हैं। स्वास्थ्य के लिए इस प्रकार की सनक भी एक रोग ही है। अपने शरीर का उचित ध्यान रखिए, किन्तु उचित से अधिक नहीं।



शिविर में कंधों पर आए और चल कर गए

उदयपुर / संस्थान निदेशक श्रीमती नासिक। सिंहस्थ नासिक की पावन धरा पर नारायण सेवा संस्थान द्वारा निःशुल्क चिकित्सा शिविर व भक्ति सेवा महायज्ञ का आयोजन हो रहा है।

बहुत समय पहले श्रवण कुमार नाम का एक बालक था। श्रवण के माता-पिता अंधे थे। श्रवण अपने माता-पिता को बहुत प्यार करता। उसकी माँ ने बहुत कष्ट उठाकर श्रवण को पाला था। जैसे-जैसे श्रवण बड़ा होता गया, अपने माता-पिता के कामों में अधिक से अधिक मदद करता। सुबह उठकर श्रवण माता-पिता के लिए नदी से पानी भरकर लाता। जंगल से लकड़ियाँ लाता। चूल्हा जलाकर खाना बनाता। माँ उसे मना करतीं- "बेटा श्रवण, तू हमारे लिए इतनी मेहनत क्यों करता है? भोजन तो मैं बना सकती हूँ। इतना काम करके तू थक जाएगा।" "नहीं माँ, तुम्हारे और पिता जी का काम करने में मुझे जरा भी थकान नहीं होती। मुझे आनंद मिलता है। तुम देख नहीं सकतीं। रोटी बनाते हुए, तुम्हारे हाथ जल जाएंगे।" "हे भगवान! हमारे श्रवण जैसा बेटा हर माँ-बाप को मिले। उसे हमारा कितना खयाल है।" माता-पिता श्रवण को आशीर्वाद देते न थकते। श्रवण के माता-पिता रोज भगवान की पूजा करते। श्रवण उनकी पूजा के लिए फूल लाता, बैठने के लिए आसन बिछाता। माता-पिता के साथ श्रवण भी पूजा करता। माता-पिता की सेवा करता श्रवण बड़ा होता गया। घर के काम पूरे कर, श्रवण बाहर काम करने जाता। अब उसके माता-पिता को काम नहीं करना होता। श्रवण के माता-पिता को बेटे के विवाह की चिन्ता हुई। अंत में एक लड़की के साथ श्रवण कुमार का विवाह हो गया। श्रवण की पत्नी का स्वभाव अच्छा नहीं था। वह आलसी और स्वार्थी स्त्री थी। उसे श्रवण के अंधे माता-पिता की सेवा करना अच्छा नहीं लगता। अक्सर माता-पिता को लेकर वह श्रवण से झगड़ा करती। वह अपने लिए अच्छा भोजन बनाती, पर श्रवण के माता-पिता को रूखा-सूखा खाना देती। एक दिन श्रवण ने देखा उसके माता-पिता नमक से रोटी खा रहे हैं श्रवण को क्रोध आ गया। "यह क्या माँ-पिता जी को रूखी रोटी। तुम्हें शर्म नहीं आती?" "क्या वे तुम्हारे माता-पिता नहीं हैं? बड़ों के साथ ऐसा बरताव क्या ठीक बात है?" "नहीं, वे मेरे कोई नहीं लगते। मैं अभी यहाँ नहीं रह सकती। मैं जा रही हूँ। तुम चाहो तो मेरे साथ आ सकते हो। नहीं तो तुम इनके साथ बने रहो। मैं चली।" श्रवण की पत्नी घर छोड़कर जाने लगी। बहुत समझाने पर भी वह नहीं रुकी न श्रवण की बात मानी, न फिर कभी वापस आई। अपना दुख भुलाकर श्रवण फिर बूढ़े

की भजन संध्या में झूम रहा है। कथा व्यास की आरती के साथ ही कार्यक्रम का शुभारम्भ हुआ। कथा व्यास की आरती पलक अग्रवाल ने की। शिविर प्रभारी राकेश शर्मा ने बताया कि डॉ. ए.एस. चूडावत व डॉ. विनोद मेहता ने अब तक 160 से अधिक निःशकजतनों की शल्य चिकित्सा से स्वास्थ्य लाभ हो चुका है तथा लगभग इसकी दोगुनी तादात में निःशक्त-बंधु

कृत्रिम हाथ-पांव व सहायक उपकरणों की सौगात पाकर खुश है। मां गोदावरी के इस पावन आंगन में, नारायण सेवा संस्थान के शिविर से निरंतर भक्ति की गंगा बह रही है, जिससे देश-विदेश से आए भक्तगण भाव विभोर होकर नाच रहे हैं। प्रातःकाल में जगद्गुरु श्री रामानन्दाचार्य व श्री दिनेशाचार्य महाराज व सांय काल में भागवत मर्मज्ञ, पूज्य श्री दयालु जी

महाराज के मुखारविंद से भजन-संध्या पर श्रद्धालु झूम उठे। सेवा शिविर में संस्थान के सैंकड़ों साधक-साधिकाएं निरंतर अपनी सेवाएं दे रहे हैं। इस अवसर पर संस्थान साधक श्री विनोद चौबीसा, श्री प्रफुल्ल व्यास, पलक अग्रवाल आदि उपस्थित थे। कार्यक्रम का संचालन श्री ओम पाल सीलन व श्रीकृपा व्यास ने अपनी मधुर वाणी में किया।

श्रवण कुमार की माता-पिता के प्रति भक्ति

माता-पिता की सेवा में जुट गया। काम पर जाने के पहले वह उनके सारे काम पूरे करके जाता। घर लौटकर उनकी सेवा करता। रात में उनके पैर दबाता। माता-पिता के सोने के बाद खुद सोता। एक दिन श्रवण के माता-पिता ने कहा- "बेटा, तुमने हमारी सारी इच्छाएँ पूरी की हैं। अब एक इच्छा बाकी रह गई है।" "कौन-सी इच्छा माँ? क्या चाहते हैं पिता जी? आप आज्ञा दीजिए। प्राण रहते आपकी इच्छा पूरी करूँगा।" "हमारी उमर हो गई अब हम भगवान के भजन के लिए तीर्थ. यात्रा पर जाना चाहते हैं बेटा। शायद भगवान के चरणों में हमें शांति मिले।" श्रवण सोच में पड़ गया। माता-पिता की इच्छा कैसे पूरी करूँ, यह बात सोचते-सोचते श्रवण को एक उपाय सूझ गया। श्रवण ने दो बड़ी-बड़ी टोकरियाँ लीं। उन्हें एक मजबूत लाठी के दोनों सिरों पर रस्सी से बाँधकर लटका दिया। इस तरह एक बड़ा काँवर बन गया। फिर उसने माता-पिता को गोद में उठाकर एक-एक टोकरी में बिठा दिया। लाठी कंधे पर टाँगकर श्रवण माता-पिता को तीर्थ यात्रा कराने चल पड़ा। श्रवण एक-एक कर उन्हें कई तीर्थ स्थानों पर ले जाता है। वे लोग गया, काशी, प्रयाग सब जगह गए। माता-पिता देख नहीं सकते थे इसलिए श्रवण उन्हें तीर्थ के बारे में सारी बातें सुनाता। माता-पिता बहुत प्रसन्न थे। एक दिन माँ ने कहा-"बेटा श्रवण, हम अंधों के लिए तुम आँखें बन गए हो। तुम्हारे मुँह से तीर्थ के बारे में सुनकर हमें लगता है, हमने अपनी आँखों से भगवान को देख लिया है।" "हाँ बेटा, तुम्हारे जैसा बेटा पाकर, हमारा जीवन धन्य हुआ। हमारा बोझ उठाते तुम थक जाते हो, पर कभी उफ नहीं करते।" पिता ने भी श्रवण को आशीर्वाद दिया। "ऐसा न कहें पिता जी, माता-पिता बच्चों पर कभी बोझ नहीं होते। यह तो मेरा कर्तव्य है। आप मेरी चिन्ता न करें।" एक दोपहर श्रवण और उसके माता-पिता अयोध्या के पास एक जंगल में विश्राम कर रहे थे। माँ को प्यास लगी। उन्होंने श्रवण से कहा- बेटा, क्या यहाँ आसपास पानी मिलेगा? धूप के कारण प्यास लग रही है। "हाँ, माँ। पास ही नदी बह रही है। मैं जल लेकर आता हूँ।" श्रवण कमंडल लेकर पानी लाने चला गया। अयोध्या के राजा दशरथ को शिकार खेलने का शौक

था। वे भी जंगल में शिकार खेलने आए हुए थे। श्रवण ने जल भरने के लिए कमंडल को पानी में डुबोया। बर्तन में पानी भरने की अवाज सुनकर राजा दशरथ को लगा कोई जानवर पानी पीने आया है। राजा दशरथ आवाज सुनकर, अचूक निशाना लगा सकते थे। आवाज के आधार पर उन्होंने तीर मारा। तीर सीधा श्रवण के सीने में जा लगा। श्रवण के मुँह से 'चीख' निकल गई। राजा जब शिकार को लेने पहुंचे तो उन्हें अपनी भूल मालूम हुई। अनजाने में उनसे इतना बड़ा अपराध हो गया। उन्होंने श्रवण से क्षमा माँगी। "मुझे क्षमा करना ए भाई। अनजाने में अपराध कर बैठा। बताइए मैं आपके लिए क्या कर सकता हूँ?" "राजन् जंगल में मेरे माता-पिता प्यासे बैठे हैं। आप जल ले जाकर उनकी प्यास बुझा दीजिए। मेरे विषय में उन्हें कुछ न बताइएगा। यही मेरी विनती है।" इतना कहते-कहते श्रवण ने प्राण त्याग दिए। दुखी हृदय से राजा दशरथ, जल लेकर श्रवण के माता-पिता के पास पहुंचे। श्रवण के माता-पिता अपने पुत्र के पैरों की आहत अच्छी तरह पहचानते थे। राजा के पैरों की आहत सुन वे चौंक गए। "कौन है? हमारा बेटा श्रवण कहाँ है?" बिना उत्तर दिए राजा ने जल से भरा कमंडल आगे कर, उन्हें पानी पिलाना चाहा, पर श्रवण की माँ चीख पड़ी-"तुम बोलते क्यों नहीं, बताओ हमारा बेटा कहाँ है?" "माँ, अनजाने में मेरा चलाया बाण श्रवण के सीने में लग गया। उसने मुझे आपको पानी पिलाने भेजा है। मुझे क्षमा कर दीजिए।" राजा का गला भर आया। "हाँ श्रवण, हाथ मेरा बेटा" माँ चीत्कार कर उठी। बेटे का नाम रो-रोकर लेते हुए, दोनों ने प्राण त्याग दिए। पानी को उन्होंने हाथ भी नहीं लगाया। प्यासे ही उन्होंने इस संसार से विदा ले ली। सचमुच श्रवण कुमार की माता-पिता के प्रति भक्ति अनुपम थी। जो पुत्र माता-पिता की सच्चे मन से सेवा करते हैं, उन्हें श्रवण कुमार कहकर पुकारा जाता है। सच है, माता-पिता की सेवा सबसे बड़ा धर्म है। कहा जाता है कि राजा दशरथ ने बूढ़े माँ-बाप से उनके बेटे को छीना था। इसीलिए राजा दशरथ को भी पुत्र वियोग सहना पड़ा रामचंद्र जी चौदह साल के लिए वनवास को गए। राजा दशरथ यह वियोग नहीं सह पाए। इसीलिए उन्होंने अपने प्राण त्याग दिए।

नारायण सेवा संस्थान
मेरा भगवान पीढ़ियों में

सिंहस्थ महाकुंभ नासिक

आस्था एवं प्राकृतिक सौंदर्य की धनी नासिक नगरी में "सिंहस्थ कुंभ 2015" चल रहा है। यह धरा पतित पावनी और लक्ष्मण जी द्वारा सूर्पनखा की नाक काटने वाली जमी है। माँ गोदावरी की गोद में वर्ष 2015 का नासिक कुंभ है। शास्त्रों की मान्यता है कि सिंहस्थ कुंभ नासिक की वेला में दिया गया दान हजार गुणा फलदायी होता है। कृपया आपश्री दान-दया-धर्म कर पुण्य अर्जित करें। संस्थान आपश्री को सेवा हेतु सादर अपील करता है।

प्रतिदिन भोजन सहयोग (500 व्यक्ति)
नाश्ता सुबह-5100 रू./सुबह का भोजन-12500 रू./शाम का भोजन-12500/पानी (प्रति दिन)-5100 रू.

कथा मुख्य यजमान - 2,00,00 /- पोथी यजमान - 21,000 /- आंशिक यजमान - 11,000 /- संकल सेवा - 5,100 /-
प्रतिदिन आरती यजमान - 11,000 /- व्यास पूजन यजमान - 11,000 /- भोजन प्रसाद यजमान - 1,00,000 /-

कृपया आपश्री संस्थान द्वारा नासिक में आयोजित कथाओं, एवं भजन प्रवाह-सत्संग के सहभागी बनें....
0294-6622222, 3990000

सिंहस्थ नासिक
की पावन धरा पर
नारायण सेवा संस्थान, उदयपुर
द्वारा

45 दिवसीय विशाल सेवा, भक्ति, ज्ञान एवं अध्यात्म यज्ञ शिविर

:: दिनांक एवं समय ::
दिनांक 12 अगस्त से 25 सितम्बर तक
प्रातः 10 से दोप. 1.30 बजे और सांय 7 से 11 बजे तक

:: स्थान ::
लक्ष्मी लॉन, जनार्दन स्वामी मठ के पास, साधु ग्राम
औरंगाबाद रोड़, तपोवन पंचवटी, नासिक (महाराष्ट्र)

“निःशुल्क”
निःशक्त जाँच एवं ऑपरेशन
कृत्रिम अंग निर्माण कार्यशाला
फिजियोथेरेपी केंद्र
सीधा प्रसारण

आस्था संस्कार अस्थि भङ्गा श्रद्धा साधना

राम कथा, भागवत कथा, कृष्ण कथा एवं शिव कथा

शरीर की रोचक जानकारियाँ

- हमारे शरीर में इतना लोहा होता है कि उससे एक इंच की कील बन सकती है।
- जिस हाथ से आप लिखते हैं, उस हाथ के नाखुन अधिक तेजी से बढ़ते हैं।
- एक नवजात शिशु एक मिनट में 60 बार सांस लेता है। जबकि एक किशोर 20 बार और एक युवा 16 बार।
- मनुष्य के जाँघों की हड्डियाँ, कंक्रीट से भी ज्यादा मजबूत होती है।
- खाए गए भोजन को पचने में लगभग 12 घंटे लगते हैं।

मुख्य कार्यकारी अधिकारी - कैलाश मानव मार्गदर्शक - प्रशान्त अग्रवाल, जगदीश आर्य, देवेन्द्र चौबीसा मार्गदर्शिका - कमला देवी, वन्दना अग्रवाल सहायक प्रबन्धक - सोहन गाडरी संपादक - लक्ष्मीलाल गाडरी संपादन सहयोगी - घनश्याम सिंह राठौड़